17

एम०ए० पूर्वार्द्ध-हिन्दी साहित्य

(सन् २०१७-१८ की परीक्षा और उससे आगे से.....)

प्रथम प्रश्न पत्र : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :	व्याख्या	तीन ३० अंक (३x१०)
	लघुउत्तरीय प्रश्न	पांच ४० अंक (५x८)
	दीर्घ उत्तरीय (समीक्षात्मक)	दो ३० अंक (२x१५)

निर्धारित कवि और काव्य :

१. विद्यापति

'पदावली' से ३० पद

पाठ्यपुस्तक : 'विद्यापति-वैभव'

सम्पादक : प्रो० रामसजन पाण्डेय, आचार्य हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

२. कबीरदास

कबीर ग्रन्थावली (सम्पादक श्यामसुन्दर दास) विभिन्न अंगों से संकलित ३० साखियाँ तथा १५ पद

पाठ्यपुस्तक : 'कबीर-काव्य-विभा'

सम्पादक : १. प्रो० हरिशंकर मिश्र, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

२. डॉ० धर्मेन्द्र कुमार शुक्ल, आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी०जी० कालेज, बभनान, गोण्डा।

३. जायसी

'पदमावत' (सम्पादक रामचन्द्र शुक्ल) से दो खण्ड

पाठ्यपुस्तक : 'पदमावत-पराग'

सम्पादक : १. डॉ० दुर्गाप्रसाद ओझा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय, लालगंज, प्रतापगढ़।

२. डॉ० श्रवण कुमार गुप्ता, हिन्दी विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी०जी० कालेज, बभनान-गोण्डा।

17

४. सूरदास

'सूरसागर' से ४० पद

पाठ्यपुस्तक : सूर-संचयन

सम्पादक : डॉ० प्रभाकर मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी०जी० कालनेज, बभनान, गोण्डा।

५. तुलसीदास

'विनयपत्रिका' (गीताप्रेस) से ४० पद

पाठ्यपुस्तक : 'विनय-पदावली'

सम्पादक : (१) डॉ० कामता कमलेश, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे० एस० हिन्दू कॉलेज, अमरोहा (उ०प्र०)।

(२) प्रो० सुधाकर सिंह, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

६. बिहारी

'बिहारी-रत्नाकर' (सम्पादक जगन्नाथ रत्नाकर) से ४० दोहे।

पाठ्यपुस्तक : 'बिहारी-वीथिका'

सम्पादक : डॉ० ममता तिवारी, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. भक्तिकाल की भूमिका	:	डॉ० प्रेमशंकर
२. मध्ययुगीन काव्य-साधना	:	डॉ० रामचन्द तिवारी
३. रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन	:	डॉ० रामकुमार वर्मा
४. संतकाव्य की सामाजिक प्रासंगिकता	:	डॉ० रवीन्द्रकुमार सिंह
५. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय	:	डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
६. विद्यापति	:	डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित
७. विद्यापति	:	डॉ० शिवप्रसाद सिंह
८. महाकवि विद्यापति	:	डॉ० जयनाथ नलिन
९. विद्यापति : व्यक्ति और कवि	:	डॉ० रामसजन पाण्डेय
१०. विद्यापति का सौन्दर्यबोध	:	डॉ० रामसजन पाण्डेय
११. कबीर	:	डॉ० आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

१२. कबीर साहित्य की परख	:	परशुराम चतुर्वेदी
१३. कबीर मीमांसा	:	डॉ० रामचन्द तिवारी
१४. कबीर की विचारधारा	:	डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत
१५. पदमावत कला काव्य-सौन्दर्य	:	डॉ० शिवसहाय पाठक
१६. जायसी की भाषा	:	डॉ० प्रभाकर शुक्ल
१७. पदमावत	:	डॉ० वासुदेवशरण शुक्ल
१८. पदमावत (भूमिका)	:	डॉ० रामचन्द शुक्ल
१९. अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय	:	डॉ० दीनदयालु गुप्त
२०. सूरदास	:	डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा
२१. महाकवि सूरदास	:	डॉ० आचार्य रामचन्द शुक्ल
२२. सूर और उनका साहित्य	:	डॉ० हरबंशलाल शर्मा
२३. भ्रमरगीत सार (भूमिका)	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
२४. सूर का शृंगार-वर्णन	:	डॉ० रमाशंकर तिवारी
२५. सूर काव्य-मीमांसा	:	डॉ० हौंसिला प्रसाद सिंह
२६. तुलसी काव्य मीमांसा	:	डॉ० उदयभानु सिंह
२७. तुलसी-दर्शन	:	डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र
२८. तुलसीदास और उनका युग	:	डॉ० राजपति दीक्षित
२९. रामकथा : उद्‌भव और विकास	:	डॉ० कामिल बुल्के
३०. तुलसीदास	:	आचार्य रामचन्द शुक्ल
३१. तुलसी साहित्य विमर्श	:	डॉ० देवकीनन्दन श्रीवास्तव
३२. त्रिवेणी	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
३३. बिहारी	:	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
३४. हिन्दी काव्य में शृंगार-परम्परा और बिहारी	:	डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त
३५. बिहारी के काव्य का पुनर्मूल्यांकन	:	डॉ० रामदेव शुक्ल
३६. बिहारी का काव्य-लालित्य	:	डॉ० रमाशंकर तिवारी
३७. बिहारी सतसई	:	जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

20 F

एम०ए० पूर्वार्द्ध-हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्नपत्र : आधुनिक गद्य

(सन् २०१७-१८ की परीक्षा और उससे आगे.....)

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :	व्याख्या	तीन ३० अंक (३x१०)
	लघुउत्तरीय प्रश्न	पांच ४० अंक (५x८)
	दीर्घ उत्तरीय (समीक्षात्मक)	दो ३० अंक (२x१५)

निर्धारित पाठ्यक्रम :

(क) निबन्ध :

१. सरदार पूर्णसिंह
२. महावीर प्रसाद द्विवेदी
३. रामचन्द्र शुक्ल
४. हजारी प्रसाद द्विवेदी
५. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
६. विद्यानिवास मिश्र
७. कुबेरनाथ राय

पाठ्यपुस्तक का नाम : 'निबन्ध-आलोक'

सम्पादक : (१) डॉ० प्रभाकर मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव पी०जी० कालेज, बभनान-गोण्डा।

(ख) नाटक :

स्कन्दगुप्त : जयशंकर प्रसाद

अथवा

आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश

(ग) उपन्यास :

गोदान - प्रेमचन्द

अथवा,

नदी के द्वीप- 'अज्ञेय'

(20)

(घ) कहानी : निर्धारित कहानीकार

१. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

२. जयशंकर प्रसाद

३. प्रेमचन्द

४. राजेन्द्र यादव

५. निर्मल वर्मा

६. उषा प्रियंवदा।

७. उदयप्रकाश

पाठ्यपुस्तक का नाम : कथा-मणि

सम्पादक : (१) प्रो० सदानन्द शाही, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(२) डॉ० परेश कुमार पाण्डेय, हिन्दी विभाग, साकेत पी०जी० कालेज, अयोध्या, फैजाबाद।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. हिन्दी का गद्य-साहित्य	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
२. निबन्ध : सिद्धान्त और प्रयोग	:	डॉ० हरिहरनाथ द्विवेदी
३. हिन्दी का गद्य साहित्य	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
४. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	:	डॉ० दशरथ ओझा
५. हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास	:	डॉ० सोमनाथ गुप्त
६. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	:	डॉ० जगन्नाथप्रसाद वर्मा
७. प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक	:	डॉ० जगदीशचन्द्र जोशी
८. प्रेमचन्द और उनका युग	:	डॉ० रामविलास शर्मा
९. हिन्दी उपन्यास	:	डॉ० शिवनारायण श्रीवास्तव
१०. गोदान	:	डॉ० इन्द्रनाथ सिंह
११. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	:	डॉ० त्रिभुवन सिंह
१२. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग	:	डॉ० त्रिभुवन सिंह
१३. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	:	डॉ० जयचन्द्र राय
१४. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी

१५. लोक जागरण और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
१६. आचार्य शुक्ल : सन्दर्भ और दृष्टि	:	डॉ० जगदीशनारायण 'पंकज'
१७. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१८. हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन	:	डॉ० ब्रह्मदेव शर्मा
१९. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास	:	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
२०. हिन्दी कहानी : रचना और प्रक्रिया	:	डॉ० परमानंद श्रीवास्तव
२१. हिन्दी कहानी : उद्भव और विकास	:	डॉ० सुरेश सिन्हा
२२. हिन्दी में ललित निबन्ध	:	डॉ० ललित व्यास
२३. मोहन राकेश : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व	:	डॉ० रमेशकुमार जाधव
२४. हिन्दी एकांकी : उद्भव और विकास	:	डॉ० रामचरण महेन्द्र
२५. अपने-अपने अज्ञेय	:	डॉ० ओम थानवी
२६. अज्ञेय	:	डॉ० सम्पादक डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी
२७. हिन्दी के साहित्य-निर्माता : अज्ञेय	:	प्रभाकर माचवे
२८. शिखर से सागर तक	:	डॉ० रामकमल राय
२९. अज्ञेय : सौन्दर्य-संधारणा	:	डॉ० दुर्गाप्रसाद ओझा
३०. अज्ञेय एवं आधुनिक रचना की समस्या	:	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी
३१. निबन्धकार अज्ञेय	:	डॉ० प्रभाकर मिश्र
३२. अज्ञेय : व्यक्तित्व-विभास	:	डॉ० दुर्गाप्रसाद ओझा
३३. मोहन राकेश और उनके नाटक	:	डॉ० गिरीश रस्तोगी

एम०ए० पूर्वार्द्ध-हिन्दी साहित्य

तृतीय प्रश्नपत्र : काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :

(क) भारतीय काव्यशास्त्र- ४० अंक

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र- ३० अंक

(ग) साहित्यालोचन- ३० अंक

नोट- (१) लघु उत्तरीय प्रश्न- ५ प्रश्न- ४०(५x८)

(२) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- ४ प्रश्न- ६०(४x१५)

पाठ्य-विषय :

(क) भारतीय काव्यशास्त्र- काव्य का स्वरूप, काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य-भेद (प्रकार), काव्य-गुण, काव्य-दोष, [redacted]। भारतीय काव्य-सम्प्रदाय-रस, रीति, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य। रस-निष्पत्ति एवं साधारणीकरण।

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र :

प्लेटो का काव्य-सिद्धान्त

अरस्तू की काव्य-विषयक मान्यताएँ

लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा।

टी० एस० इलियट- निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा।

(ग) साहित्यालोचन : (अ) आधुनिक हिन्दी-आलोचक और उनकी मान्यताएँ : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० नामवर सिंह

(ब) आधुनिक आलोचना के प्रमुख वाद : स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. साहित्यालोचन	:	डॉ० श्यामसुन्दर दास
२. रस-मीमांसा	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
३. सिद्धान्त और अध्ययन	:	बाबू गुलाबराय
४. भारतीय कामशास्त्र की परम्परा	:	डॉ० नगेन्द्र
५. भारतीय काव्यशास्त्र	:	डॉ० कृष्णबल
६. भारतीय साहित्यशास्त्र	:	आचार्य बलदेव उपाध्याय
७. काव्यशास्त्र-विमर्श	:	डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी
८. रीतिकाव्य की भूमिका	:	डॉ० नगेन्द्र
९. काव्य रस : चिन्तन और आस्वाद	:	डॉ० भगीरथ मिश्र
१०. काव्यशास्त्र	:	डॉ० भगीरथ मिश्र
११. रस-सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र	:	डॉ० निर्मला जैन
१२. पाश्चात्य काव्यशास्त्र	:	प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा
१३. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	:	डॉ० भगीरथ मिश्र
१४. प्लेटो के काव्य-सिद्धान्त	:	डॉ० निर्मला जैन
१५. अरस्तू का काव्यशास्त्र	:	डॉ० नगेन्द्र
१६. रीति और शैली	:	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
१७. रस-सिद्धान्त	:	डॉ० नगेन्द्र
१८. आलोचना का दायित्व	:	रामचन्द्र तिवारी
१९. हिन्दी-आलोचना का विकास	:	नन्दकिशोर नवल
२०. हिन्दी-आलोचना	:	डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी
२१. हिन्दी-आलोचना : शिखरों से साक्षात्कार	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
२२. आलोचक और आलोचना	:	डॉ० बच्चन सिंह
२३. काव्य-चिन्तन की पश्चिमी परम्परा	:	निर्मला जैन
२४. आस्तित्ववाद-कीर्केगार्द से कामू तक	:	योगेन्द्र साही
२५. पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त और वाद	:	डॉ० सत्यदेव मिश्र
२६. उदात्त के विषय में	:	डॉ० निर्मला जैन
२७. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव	:	डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा
२८. आलोचना के रचना-पुरुष	:	(सम्पा०) भारत यायावर
२९. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी

चतुर्थ प्रश्नपत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन : (क) लघु उत्तरीय प्रश्न ५- ४० अंक (५x८)

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ४- ६० अंक (४x१५)

पाठ्य-विषय :

- ♦ साहित्येतिहास की अवधारणा।
- ♦ हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा तथा मूलस्रोत।
- ♦ हिन्दी साहित्य के इतिहासलेखन की समस्याएँ।
- ♦ हिन्दी साहित्य का इतिहास : कालविभाजन, सीमानिर्धारण और नामकरण।

♦ आदिकाल : विविध नामकरण, मुख्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)। प्रतिनिधि रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ।

♦ भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल) : भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ, भक्तिकाल की [redacted] काव्यधाराएँ-निर्गुण काव्यधारा : ज्ञानाश्रयी तथा प्रेमाश्रयी धारा, सगुण काव्यधारा : कृष्णभक्तिधारा तथा रामभक्तिधारा और उनकी सामान्य प्रवृत्तियाँ। भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का वैशिष्ट्य।

♦ रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल) : नामकरण, रीतिकाल की विभिन्न धाराएँ- (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधारा) और उनकी प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ।

♦ आधुनिक काल : भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता तथा समकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ। आधुनिक काल के प्रमुख कवियों एवं उनकी प्रमुख रचनाओं का परिचय। हिन्दी-गद्य की प्रमुख विधाओं (निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक) तथा गद्य की अन्य विधाओं, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, यात्रावृत्त, डायरी, फीचर साक्षात्कार आदि का परिचय। गद्य-साहित्य की [redacted] विधाओं के प्रमुख रचननाकार तथा उनकी प्रमुख रचनाएँ। हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास	:	डॉ० किशोरीलाल गुप्त
२. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	:	डॉ० रामविलास शर्मा
३. हिन्दी साहित्य का इतिहास	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
४. हिन्दी सात्यि का आदिकाल	:	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
५. हिन्दी साहित्य की भूमिका	:	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
६. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	:	डॉ० रामकुमार वर्मा
७. हिन्दी साहित्य का इतिहास	:	डॉ० नगेन्द्र
८. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास	:	डॉ० श्री कृष्णलाल
९. आधुनिक हिन्दी साहित्य	:	डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
१०. हिन्दी साहित्य का अतीत	:	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
११. हिन्दी का सामयिक साहित्य	:	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
१२. सरोज-सर्वेक्षण	:	डॉ० किशोरीलाल गुप्त
१३. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्यात्मक इतिहास	:	डॉ० शिवमूर्ति शर्मा
१४. हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य	:	अज्ञेय
१५. हिन्दी कथा साहित्य	:	गंगाप्रसाद पाण्डेय
१६. हिन्दी साहित्य का नया इतिहास	:	डॉ० बच्चन सिंह
१७. आधुनिक साहित्य	:	आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
१८. नया साहित्य : नये प्रश्न	:	आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
१९. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य	:	डॉ० इन्द्रनाथ मदान
२०. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	:	डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त
२१. आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	:	डॉ० भोलानाथ
२२. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का विकास	:	डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
२३. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्यात्मक इतिहास	:	डॉ० वासुदेव सिंह
२४. हिन्दी साहित्य : एक परिचय	:	डॉ० त्रिभुवन सिंह
२५. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	:	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी
२६. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ	:	डॉ० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल

एम०ए० पूर्वार्द्ध हिन्दी-पंचम् प्रश्न-पत्र

पंचम प्रश्न पत्र : भारतीय साहित्य

(सन् : २०१७-१८ एवं उससे आगे..........)

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :	व्याख्या	३० अंक (३x१०)
	लघु उत्तरीय प्रश्न	४० अंक (५x८)
	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	३० अंक (२x१५)

भारतीय साहित्य :

- भारतीय साहित्य का स्वरूप।
- [illegible]।
- भारतीय साहित्य में बहुलता [illegible]।
- भारतीय साहित्य में यथार्थ और आदर्श का अन्तस्सम्बन्ध और आदर्शोन्मुखता की प्रवृत्ति।
- भारतीय साहित्य में [illegible] मूल्य-चेतना
- भारतीय साहित्य का संक्षिप्त परिचय (बंगला, असमी, उड़िया, पंजाबी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू, मलयालम)।
- उपन्यास :

  गोरा : रवीन्द्रनाथ टैगोर

  अथवा,

  संस्कार : यू०आर० अनन्तमूर्ति
- नाटक : घासीराम कोतवाल - विजय तेन्दुलकर

  पाठ्य पुस्तक - भारतीय साहित्य : चुनी हुई रचनायें - कविता (पाँच कवितायें हिन्दी अनुवाद सहित), कहानी (हिन्दीतर एक) संस्मरण (हिन्दीतर एक), आलेख (हिन्दीतर एक)

सम्पादक :
प्रो० अनन्त मिश्र,
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय (उ०प्र०)।

सम्पादक :
प्रो० चित्तरंजन मिश्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय (उ०प्र०)।

सहायक पुस्तकें :

- भारतीय साहित्य : सम्पादक डॉ० नगेन्द्र
- भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ : इन्द्रनाथ चौधुरी
- भारतीय साहित्य : लक्ष्मीकान्त पाण्डेय
- भारतीय साहित्य : सम्पादक डॉ० मूलचन्द गौतम
- चयनम् : सम्पादक अरुण प्रकाश

एम०ए० पूर्वार्द्ध-हिन्दी

संलग्नक - १

कबीर ग्रन्थावली सम्पादक : श्याम सुन्दर दास

साखी

अंग	साखी संख्या
गुरूदेव कौ अंग	३३, ३४
सुमिरण कौ अंग	३०, ३२
बिरह कौ अंग	०१, ०२
परचा कौ अंग	०५, २२
चितावणी कौ अंग	१३, २७
मन कौ अंग	१८, १९
माया कौ अंग	१५, २०
कुसंगति कौ अंग	०२, ०७
साध कौ अंग	०८
साध-साषीभूत कौ अंग	०१
साध-महिमा कौ अंग	०३, १०
सबद कौ अंग	०१, ०४
मूरातत कौ अंग	१७, २४
काल कौ अंग	०४, ११
कस्तूरिया मृग कौ अंग	०५, ०७
बेलि कौ अंग	०२, ०३

पद

संख्या : २३, ४३, ४४, १३१, १८४, १८६, २४३, २९१, ३०६, ३०८, ३३४, ३३८, ३५२, ३८४, ३९६,

एम०ए०-1 हिन्दी सेलगनक-1 10 पेज

95

कबीरदास

साखी

गुरुदेव को अंग

सतगुर हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग ।
बरस्या बादल प्रेम का भीजि गया सब अंग ।। १ ।।
कबीर बादल प्रेम का, हम परि बरष्या आइ ।
अंतरि भीगी आत्माँ हरी भई बनराइ ।। २ ।।

सुमिरण को अंग

कबीर राम ध्याइ लै, जिभ्या सौं करि मंत।
हरि सागर जिनि बीसरै, छीलर देखि अनंत।। १ ।।
कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिस लागी लाइ।
हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ।। २ ।।

बिरह को अंग

रात्यूँ रूँनी बिरहनीं ज्यूँ बँची कूँ कुंज।
कबीर अंतर प्रजल्या, प्रगट्या बिरहा पुंज ।। १ ।।
अंबर कुंजा कुरलियाँ, गरजि भरे सब ताल।
जिनि थें गोविंद बीछुटें, तिनके कौण हवाल ।। २ ।।

परचा कौ अंग

हदे छाडि बेहदि गया, हुआ निरंतर बास।
कवल ज फूल्या फूल बिन, को निरखै निज दास ॥१॥
सुरति समांणी निरति मैं, निरति रही निरधार।
सुरति निरति परचा भया, तब खूले स्यंभ दुवार ॥२॥

चितावणी कौ अंग

यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठै रंगि न भूलि ॥१॥
कबीर हरि की भगति बिन, ध्रिग जीमण संसार।
धूंवां केरा धौलहर, जात न लागै बार ॥२॥

मन कौ अंग

कोटि कर्म पल मैं करै, यहु मन बिषिया स्वादि।
सतगुर सबद न मानई, जनम गँवाया बादि ॥१॥
मैमंता मन मारि रे, घटहीं माँहैं घेरि।
जबहीं चालै पीठि दै, अंकुस दै दै फेरि ॥२॥

47

माया कौ अंग

त्रिषणा सींची ना बुझै, दिन दिन बढ़ती जाइ।
जवासा के रूष ज्यूं, घण मेहां कुमिलाइ ॥१॥
माया तरवर त्रिविध का, साखा दुख संताप।
सीतलता सुपिनै नहीं, फल फीको तनि ताप ॥२॥

कुसंगति कौ अंग

मूरिष संग न कीजिए, लोहा जलि न तिराइ।
कदली सीप भवंग मुषि, एक बूंद तिहुँ भाइ ॥१॥
ऊंचे कुल क्या जनमियां, जे करणी ऊंच न होइ।
सोवन कलस सुरै भर्या, साधू निंद्या सोइ ॥२॥

साध कौ अंग

कबीर खाई कोट की, पांणी पिवै न कोइ।
आइ मिलै जब गंग मैं, तब सब गंगोदिक होइ ॥१॥
निरवैरी निह-कांमता, सांई सेती नेह।
बिषिया सूं न्यारा रहै, संतनि का अंग एह ॥२॥

साध महिमा कौ अंग

जिहि घर साध न पूजिये, हरि की सेवा नाहिं।
ते घर मड़हट सारषे, भूत बसैं तिन माहिं ॥१॥

राम जपत दालिद भला, टूटी घर की छाति।
ऊँचे मंदिर जालि दे, जहां भगति न सारंगपानि ॥२॥

सबद कौ अंग

कबीर सबद सरीर मैं, बिनि गुण बाजै तंति।
बाहरि भीतरि भरि रह्या, ताथैं छूटि भरंति ॥१॥

सतगुर सांचा सूरिवां, सबद जु बाह्या एक।
लागत ही भैं मिलि गया, पड़्या कलेजै छेक ॥२॥

सूरा तन कौ अंग

ऊंचा बिरष अकासि फल, पंषी मुए झूरि।
बहुत सयानें पचि रहे, फल निरमल परि दूरि ॥१॥

दुहेली

भगति दुहेली राम की, नहिं कायर का काम।
सीस उतारै हाथि करि, सो लेसी हरि नाम ॥२॥

काल कौ अंग

सब जग सूता नींद भरि, संत न आवै नींद।
काल खड़ा सिर ऊपरै, ज्यूँ तोरणि आया बींद॥1॥

जो ऊग्या सो आँथवै, फूल्या सो कुमिलाइ।
जो चिणियाँ सो ढहि पड़ै, जो आया सो जाइ॥2॥

कस्तूरिया मृग कौ अंग

घटि बधि कहीं न देखिये, ब्रह्म रह्या भरपूरि।
जिनि जान्याँ तिनि निकटि है, दूरि कहैं ते दूरि॥1॥

तिणकै ओल्हे राम है, परबत मेरै भाइ।
सतगुर मिलि परचा भया, तब हरि पाया घट माँहि॥2॥

बेलि कौ अंग

आगैं आगैं दौं जलै, पीछे हरिया होइ।
बलिहारी ता बिरषि की, जड़ काट्याँ फल होइ॥1॥

जे काटौं तौ डहडही, सींचौं तौ कुमिलाइ।
इस गुणवंती बेलि का, कुछ गुण कह्या न जाइ॥2॥

पद

मन रे जागत रहिये भाई ।
गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर मुसै घर जाई ।।
षट चक्र की कनक कोठड़ी, बस्त भाव है सोई ।
ताला कूंची कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई ।।
पंच पहरवा सोइ गये हैं, बसतैं जागण लागी ।
जुरा मरण व्यापै कुछ नाहीं, गगन मंडल लै लागी ।।
करत बिचार मनही मन उपजी, नां कहीं गया न आया ।
कहै कबीर संसा सब छूटा, राम रतन धन पाया ।।१।।

हम न मरैं मरिहै संसारा, हम कूं मिल्या जियावनहारा ।।
अब न मरौं मरनै मन मांनां, तेई मूए जिनि राम न जांनां ।।
साकत मरैं संत जन जीवैं, भरि-भरि राम रसाइन पीवैं ।।
हरि मरिहैं तौ हमहूं मरिहैं, हरि न मरैं हम काहे कूं मरिहैं ।।
कहै कबीर मन मनहि मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा ।।२।।

कौन मरै कौन जनमै आई, सरग नरक कौनैं गति पाई ।।
पंचतत अबिगत थैं उतपनां, एकै किया निवासा ।
बिछुरे तत फिरि सहजि समानां, रेख रही नहीं आसा ।।
जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है, बाहरि भीतरि पानी ।
फूटा कुंभ जल जलहि समानां, यहु तत कथौ गियानी ।।
आदै गगनां अंतै गगनां, मधे गगनां भाई ।
कहै कबीर करम किस लागै, झूठी संक उपाई ।।३।।

जो तूं रसनां राम न कहिबौ,
तौ उपजत बिनसत भरमत रहिबौ ।।
जैसी देखि तरवर की छाया, प्रान गये कहु का की माया ।।
जीवत कछू न कीया प्रवांनां, मूवा मरम को काकर जांनां ।।
अंधि काल सुख कोई न सोवै, राजा रंक दोऊ मिलि रोवै ।।
हंस सरोवर कंवल सरीरा, राम रसाइन पीवै कबीरा ।।४।।

ऐसा जन एक आध है कोई ।
काम क्रोध अरु लोभ विवर्जित, हरिपद चीन्हे सोई ।।
राजस तामस सातिग तीन्यूं, ये सब तेरी माया ।
चौथे पद को जे जन चीन्हे, तिनहि परम पद पाया ।।
असतुति निंदा आसा छाँडे, तजै मान अभिमाना ।
लोहा कंचन समि करि देखे, ते मूरति भगवाना ।।
च्यंते तो माधो च्यंतामणि, हरिपद रमै उदासा ।
त्रिस्ना अरु अभिमान रहित है, कहै कबीर सो दासा ।।

जब थैं आतम तत्त बिचारा ।
तब निरबैर भया सबहिन थैं, काम क्रोध गहि डारा ।।
व्यापक ब्रह्म सबनि मैं एकै, को पंडित को जोगी ।
राणा राव कवन सूं कहिये, कवन बैद को रोगी ।।
इनमैं आप आप सबहिन मैं, आप आपसूं खेलै ।
नाना भांति घडे सब भांडे, रूप धरे धरि मेलै ।।
सोचि बिचारि सबै जग देख्या, निरगुण कोई न बतावै ।
कहै कबीर गुणी अरु पंडित, मिलि लीला जस गावै ।।

मेरी मेरी करतां जनम गयो,
जनम गयो परि हरि न कह्यो ।।
बारह बरस बालापन खोयो, बीस बरस कछु तप न कीयो ।
तीस बरस के राम न सुमिरयो, फिरि पछितानो बिरध भयो ।।
सूकै सरवर पालि बंधावै, लुणे खेत हठि बाडि करै ।
आयो चोर तुरंग मुसि ले गयो, मोरी राखत मुगध फिरै ।।
सीस चरन कर कंपन लागे, नैन नीर असराल बहै ।
जिभ्या बचन सुध नहीं निकसै, तब सुकरित की बात कहै ।।
कहै कबीर सुनहु रे संतो, धन संच्यो कछु संगि न गयो ।।
आई तलब गोपाल राइ की, मैडी मंदिर छाडि चल्यो ।।

तब काहे भूलो बनजारे, अब आयो चाहै संगि हमारे ।
जब हम बनजी लौंग सुपारी, तब तुम्ह काहे बनजी खारी ।
जब हम बनजी परमल कसतूरी, तब तुम्ह काहे बनजी कूरी ।
अमृत छाडि हलाहल खाया, लाभ लाभ करि मूल गंवाया ।।
कहै कबीर हम बनज्या सोई, जाथै आवागमन न होई ।।

वै दिन कब आवैंगे माइ ।
जा कारनि हम देह धरी है, मिलिबौ अंगि लगाइ ।
हौं जांनूं हिल मिलि खेलौं, तन मन प्रांन समाइ ।
या कांमनां करौ परपूरन, समरथ हौ रांम राइ ।
मांहि उदासी माधौ चाहै, चितवत रैंनि बिहाइ ।
सेज हमारी स्यंघ भई है, जब सोऊं तब खाइ ।
यहु अरदास दास की सुनियै, तन की तपति बुझाइ ।
कहै कबीर मिलै जे सांई, मिलि करि मंगल गाइ ॥ ९

माधौ कब करिहौ दाया ।
काम क्रोध अहंकार व्यापै, नां छूटै माया ॥
उतपति ब्यंद भयौ जा दिन थैं, कबहू सच नहीं पायौ ।
पंच चोर संगि लाइ दिए हैं, इन संगि जनम गंवायौ ॥
तन मन डस्यौ भुजंग भांमिनीं, लहरी वार न पारा ।
सो गारुड़ मिल्यौ नहीं कबहूं, पसरयौ बिष बिकराला ॥
कहै कबीर यहु कासूं कहियै, यहु दुख कोइ न जांनैं ।
देहु दीदार बिकार दूरि करि, तब मेरा मन मांनैं ॥ १०

अब हरि हूं अपनौं करि लीनौं,
प्रेम भगति मेरौ मन भीनौं ॥
जरै सरीर अंग नहीं मोरौं, प्रांन जाइ तौ नेह न तोरौं ॥
च्यंतामणि क्यूं पाइए ठोली, मन दे रांम लियौ निरमोली ॥
ब्रह्म खोजत जनम गंवायौ, सोई रांम घट भीतरि पायौ ॥
कहै कबीर छूटी सब आस, मिल्यौ रांम उपज्यौ बिसवास ॥ ११

एक निरंजन अलह मेरा, हिंदू तुरक दहूं नहीं मेरा ॥
राखूं ब्रत न महरम जांनां, तिसही सुमिरूं जो रहै निदांनां ॥
पूजा करूं न निमाज गुजारूं, एक निराकार हिरदै नमसकारूं ॥
नां हज जांऊं न तीरथ पूजा, एक पिछांण्यां तौ क्या दूजा ॥
कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूं मन लागा ॥ १२

जागहु रे नर सोवहु कहा, जम बटपारै रूंधे पहा ॥
जागि चेति कछू करौ उपाइ, मोटा बैरी है जमराइ ॥
सेत काग आये बन माँहि, अजहूँ रे नर चेतै नाँहि ॥
कहै कबीर तबै नर जागै, जम का डंड मूंड मैं लागै ॥१३॥

माधौ दारुन दुख सह्यौ न जाइ ॥
मेरो चपल बुधि तातैं कहा बसाइ ॥
तन मन भीतरि बसै मदन चोर, जिनि ग्यान रतन हरि लीन्ह मोर ॥
मैं अनाथ प्रभु कहूँ काहि, अनेक बिगूचे मैं को आहि ॥
सनक सनंदन सिव सुकादि, आपण कवलापति भये ब्रह्मादि ॥
जोगी जंगम जती जटाधार, अपनैं औसर सब गये हैं हारि ॥
कहै कबीर रहु संग साथ, अभिअंतरि हरि सूँ कहौ बात ॥
मन ग्यान जानि कै करि बिचार, राम रमत भौ तिरबौ पार ॥१४॥

जतन बिन मृगनि खेत उजारे ।
टारे टरत नहीं निस बासुरि, बिडरत नहीं बिडारे ॥
अपनें अपनें रस के लोभी, करतब न्यारे न्यारे ।
अति अभिमान बदत नहीं काहू, बहुत लोग पचि हारे ॥
बुधि मेरी किरषी गुर मेरौ बिझुका, आखिर दोइ रखवारे ।
कहै कबीर अब खान न दैहूँ, बरियां भली सँभारे ॥१५॥

एम०ए० - I हिन्दी

संलग्नक 4 पेपर

सूरदास

विनय

(1)

चरन-कमल बंदौ हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कौं सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौ तिहिं पाई।।1।।

(2)

अबिगति-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस अन्तरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरन्तर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौं अगम अगोचर, सो जानै जो पावै।।
रूप-रेख-गुन-जाति जुगुति, बिनु निरालम्ब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै।।2।।

(3)

प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ।
अति-गंभीर-उदार-उदधि हरि, जान-सिरोमनि राइ।
तिनका सौं अपने जन कौ गुन मानत मेरु-समान।
सकुचि गनत अपराध-समुद्रहिं बूँद-तुल्य भगवान।
बदन प्रसन्न-कमल-सनमुख ह्वै देखत हौं हरि जैसें।
बिमुख भए अकृपा न निमिषहूँ, फिरि चितयौं तौ तैसें।
भक्त-बिरह-कातर करुनामय, डोलत पाछैं लागे।
सूरदास ऐसे स्वामी कौं देहिं पीठि सो अभागे।।3।।

(4)

अब कैं राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।
ताकें डर में भाज्यौं चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दुहूँ भाँति दुख भयौं आनि यह, कौन उबारे प्रान ?
सुमिरत ही अहिं डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ सन्धान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहि जय-जय कृपानिधान।।4।।

(5)

कीजै प्रभु अपने बिरद की लाज।
महा पतित, कबहूँ नहिं आयौ, नैकु, तिहारैं काज।
माया सबल धाम-धन-बनिता बँध्यौ हौं इहिं साज।
देखत-सुनत सबै जानत हौं, तऊ न आयौ बाज।
कहियत पतित बहुत तुम तारे, स्रवननि सुनी अवाज।
दई न जाति खेवट उतराई, चाहत चढ्यौ जहाज ?
लीजै पार उतारि सूर कौं, महाराज ब्रजराज।
नई न करन कहत प्रभु, तुम हौ सदा गरीब-निवाज।।5।।

(6)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ?
तुम सौं कहा छिपी करुनामय, सबके अंतरजामी !
जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोन-हरामी।
भरि-भरि द्रोह बिषै कौं धावत, जैसे सूकर ग्रामी।
सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिषयिनि सँग बिसरामी।
श्रीहरि-चरन छाँड़ि बिमुखनि की निसि-दिन करत गुलामी।
पापी परम, अधम, अपराधी, सब पतितनि मैं नामी।
सूरदास प्रभु अधम-उधारन, सुनियै श्रीपति स्वामी।।6।।

(7)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसैं उड़ि जहाज कौ पच्छी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।
परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अम्बुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल-भावै।
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।7।।

(8)

रे मन मूरख, जनम गँवायौ।
करि अभिमान विषय-रस गीध्यौ स्याम-सरन नहि आयौ।
यह संसार सुवा-समेर ज्यौं, सुन्दर देखि लुभायौ।
चाखन लाग्यौ रूई गई उड़ि, हाथ कछू नहिं आयौ।
कहा होत अब के पछिताऐं पहलैं पाप कमायौ।
कहत सूर भगवंत-भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछितायौ।।8।।

(9)

जैसें राखहु तैसैं रहौं।
जागत हौ दुख-सुख सब जन के, मुख करि कहा कहौं।
कबहुँक-भोजन लहौ कृपानिधि, कबहुँक, भूख सहौं।
कबहुँक चढ़ौं तुरंग महा गज, कबहुँक भार वहौं।
कमल-नयन, घन-स्याम-मनोहर, अनुचर भयौ रहौं।
सूरदास-प्रभु भक्त-कृपानिधि, तुम्हरे चरन गहौं।।9।।

(10)

सोभा-सिन्धु न अंत रही री।
नंद-भवन भरि पूरि उमँगि चलि, ब्रज की बीथिनि फिरति बही री।
देखी जाइ आजु गोकुल मैं, घर-घर बेंचति फिरति दही री।
कहँ लगि कहौं बनाइ बहुत बिधि, कहत न मुख सहसहुँ निबही री।
जसुमति-उदर अगाध-उदधि तैं, ब्रज-बनिता उर लाइ गही री।।10।।

(11)

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुलावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै।
इहिं अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
तो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नन्द-भामिनि पावै।।11।।

(12)

कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी।
जो मन मैं अभिलाष करति हो, सो देखति नँद-घरनी।
रुनुक, झुनुक नूपुर पग बाजत, धुनि अतिहिं मन-हरनी।
बैठि जात पुनि उठत तुरतहीं, सो छबि जाइ न बरनी।
ब्रज-जुवती सब देखि थकित भईं, सुन्दरता की सरनी।
चिरजीवहु जसुदा को नन्दन, सूरदास कौं तरनी।।12।।

(13)

खेलत हरि निकसे ब्रज-खोरी।
कटि कछनी पीताम्बर बाँधे, हाथ, लए भौंरा, चक डोरी।।
मोर मुकुट, कुंडल स्रवननि वर, दसन-दमक दामिनि छवि छोरी।
गए स्याम रवि-तनया कै तट, अंग लसति चंदन की खोरी।।
औचक ही देखी तहँ राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी।
नील बसन फरिया कटि पहिरे, बेनी पीठि रुलति झकझोरी।।
संग लरिकिनी चली इत आवति दिन-थोरी, अति छवि-तन गोरी।
सूर स्याम देखत हीं रीझे, नैन-नैन मिलि परी ठगोरी।।13।।

(14)

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कबहूँ ब्रज खोरी।।
काहे को हम ब्रज तन आवति, खेलति रहत आपनी पौरी।
सुनत रहत स्रवननि नन्द-ढोटा, करत फिरत माखन दधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी।।14।।

(15)

धेनु दुहत अतिहीं रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।।
मोहन-कर तैं धार चलति, परि मोहनि-मुख अतिहीं छवि गाढ़ी।
मनु जलधर जलधार वृष्टि-लघु, पुनि-पुनि प्रेम चंद पर बाढ़ी।।
सखी संग की निरखति यह छबि, भई व्याकुल मन्मथ की डाढ़ी।
सूरदास प्रभु के रस-बस सब, भवन-काज तैं भई उचाढ़ी।।15।।

(16)

जब हरि मुरली अधर धरी।
गृह-ब्यौहार तजे आरज-पथ, चलत न संक करी।।
पदरिपु पट अँटक्यौ न सम्हारति, उलट न पलट खरी।
सिव-सुत-वाहन आइ मिले हैं, मन चित बुद्धि हरी।।
दुरि गये कीर, कपोत, मधुप, पिक, सारँग सुधि बिसरी।।
उडुपति विद्रुम, बिंब खिसाने, दामिनि अधिक डरी।।
मिलिहैं स्यामहि हंस-सुता-तट, आनँद-उमँग भरी।।
सूर स्याम कौं मिलीं परस्पर, प्रेम-प्रभाव ढरी।।16।।

(17)

काहे को रोकत मारग सूधो।
सुनहु मधुप ! निर्गुन कंटक तैं राजपन्थ क्यों रूँधौ।
कै तुम सिखै पठए कुबजा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान सुमृति सब ढूँढ़ौं, जुवतिन जोग कहूँ धौं।
ताको कहा परेखो कीजै, जानत छाछ न दूधौ।
सूर मूर अक्रूर गये लै, ब्याज निबेरत ऊधौ।।17।।

(18)

कहत कत परदेसी की बात।
मंदिर-अरध अवधि बदि हमसौं, हरि अहार चलि-जात।।
ससि-रिपु बरष, सूर-रिपु जुग बर, हर-रिपु कीन्ह्यो घात।
मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात।।
नखत बेद, ग्रह जोरि अरध करि, सोइ बनत अब खात।
'सूरदास' बस भई बिरह के, कर मींजत पछितात।।18।।

(19)

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत-स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।।
सु तौ ब्याधि हमको लै आए, देखी-सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपो, जिनके मन चकरी।।19।।

(20)

उपमा हरितनु देखि लजानी।
कोउ जल मैं, कोउ बननि रहीं दुरि, कोउ कोउ गगन समानी।।
मुख निरखत ससि गयौ अम्बर कौं तड़ित दसन छबि हेरि।
मीन कमल, कर चरन नयन डर, जल मैं कियौ बसेरि।।
भुजा देखि अहिराज लजाने, बिबरनि पैठे धाइ।
कटि निरखत केहरि डर मान्यौ, बन-बन रहे दुराइ।।
गारी देहिं कबिनि कौं बरनत, री अँग पटतर देत।
'सूरदास' हमकौं सरमावत, नाउँ हमारो लेत।।20।।

(21)

पिया बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात।।
जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत, प्रीति सिरानी जात।
'सूर' स्याम बिनु बिकल बिरहिनी, मुरि मुरि लहरैं खात।।21।।

(22)

मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े क्यौं न जरे।।
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे।।
यह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि-फिर पुहुप धरे।
'सूरदास' प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे।।22।।

(23)

(मेरे) नैना बिरह की बेलि बई।
सींचत नैन नीर के सजनी, मूल पताल गई।।
बिगसित लता सुभाइ आपनैं, छाया सघन भई।
अब कैसें निरवारौं सजनी, सब तन पसरि छई।।
को जानौ काहू के जिय की, छिन छिन होत नई।
'सूरदास' स्वामी के बिछुरैं, लागी प्रैम जई।।23।।

(24)

सँदेसौ देवकी सौं कहियौ।
हौ तौ धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानति उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनी अरु तातौ जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती, क्रम क्रम करि कैन्हाते।।
'सूर' पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन, बढ़यौ रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतौ मोहन, ह्वै है करत संकोच।।24।।

(25)

देखियति कालिंदी अति कारी।
अहौ पथिक कहियौ उन हरि सौं, भई बिरह जुर जारी।।
गिरिप्रजंक तैं गिरति धरनि धँसि, तरँग तरफ तन भारी।
तट बारू उपचार चूर, जलपूर प्रस्वेद पनारी।।
गिलित कच कुस काँस कूल पर, पंक जु काजल सारी।
भौंर भ्रमत अति फिरति, भ्रमित गति दिसि दिसि दीन दुखारी।।
निसि दिन चकई पिय जु रटति है, भई मनौ अनुहारी।
'सूरदास' प्रभु जो जमुना गति, सो गति भई हमारी।।25।।

(26)

दूरि करहि बीना कर धरिबौ।
रथ थाक्यौ, मानो मृग मोहे, नाहिंन होत चंद कौ ढरिबौ।।
बीतै जाहि सोइ पै जानै, कठिन सु प्रेम पास कौ परिबौ।
प्राननाथ संगहिं, तैं बिछुरे, रहत न नैन नीर कौ ढरिबौ।।
सीतल चंद अगिन सम लागत, कहिए धीर कौन बिधि धरियौ।
'सूर' सु कमलनयन के बिछुरैं, झूठौ सब जतननि कौ करिबौ।।26।।

(27)

सँदेसनि मधुबन कूप भरे।
अपने तौ पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।।
जिते पथिक पठये मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे।
कै वै स्याम सिखाइ प्रबोधे, कै कहुँ बीच मरे।।
कागद गरे मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।
सेवक 'सूर' लिखन कौ आंधौ, पलक कपाट करे।।27।।

(28)

निरगुन कौन देश कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझत साँच न हांसी।।
को है जनक, कोन है जननी, कौन नारि, को दासी ?
कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी ?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगो गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौं, 'सूर' सबै मति नासी।।28।।

(29)

अँखियां हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूप रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत, तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग सन्देसनि सुनि-सुनि अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख आनि दिखावहुँ, दुहि पय पियत पतूखी।
सूर सिकत हठि नाव चलावत, ये सरिता है सूखी।।29।।

(30)

जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै।
मूरी के पातनि के बदलैं को मुक्ताहल दैहै।
यह ब्यौपार तुम्हारौ ऊधौ, ऐसैं ही धर्‌यौ रैहै।
जिन पै तैं लै आए ऊधौ, तिनहिं के पेट समैहै।
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै।
गुन करि मोही 'सूर' सांवरैं, को निरगुन निरबैहै।। 30।।

(31)

मन तोसौं किती कही समुझाइ।
नन्द-नन्दन के चरन-कमल भजि, तजि पांखड चतुराइ।
सुख-सम्पत्ति, दारा-सुत, हय गय, छूट सबै समुदाइ।
छन-भंगुर यह सबै स्याम बिनु, अन्त नाहिं संग जाइ।
जनमत-मरत बहुत युग बीते, अजहूँ लाज न आइ।
सूरदास भगवन्त-भजन बिनु, जैहै जनम गँवाइ।।31।।

(32)

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल।
महा मोह के नूपुर बाजे, निन्दा सब्द-रसाल।
भ्रम-भोयौ मन भयो पखावज, चल असँगत चाल।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल।
माया की कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल।।32।।

(33)

प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी।
जैसें बधिक चुगाइ कपट कन, पाछैं करत बुरी।।
मुरली मधुर चेंप काँपौ करि, मोर-चन्द्र फँदिवारि।
बंक बिलोकनि लगी लोभ-बस सकौ न पंख पसारि।।
तरफत छाँड़ि गये मधुबन कौ, बहुरि न कीन्हीं सार।
सूरदास प्रभु-संग कल्पतरु, उलटि न बैठी डार।।33।।

(34)

रहीं जहाँ सो तहाँ सब ठाढ़ी।
हरि के चलत देखियत ऐसी, मनहु चित्र लिखि काढ़ी।।
सूखे बदन, स्रवति नैननि तैं, जलधारा उर बाढ़ी।
कंधनि बाँह धरे चितवति मनु, द्रुमनि बेलि दव दाढ़ी।।
नीरस करि छाँड़ो सुफलकसुत, जैसैं दूध बिनु साढ़ी।
'सूरदास' अक्रूर कृपा तैं, सहीं बिपति तन गाढ़ी।।34।।

भक्त हेतु अतनार धरौं।
कर्म-धर्म कै बस मैं नाहीं, जोग-जज्ञ मन मैं न करौं।।
दीन-गुहारि सुनौं स्रवननि भरि, गर्ब-वचन सुनि हृदय तरौं।
भाव-अधीन रहौं सबहीं कैं, और न काहू नैंकु डरौं।।
ब्रह्म-कीट आदि लौं व्यापक, सबकौ सुख दै दुखहि हरौं।
सूर स्याम तब कही प्रगटही, जहाँ भाव तहँ न टरौं।।35।।

(36)

अपनी सी कठिन करत मन निसिदिन।
कहि-कहि कथा मधुप समुझावति तदपि न रहत नन्द-नन्दन बिन।।
बरजत स्रवन सन्देस नयन जल मुख बतियाँ कछु और चलावत।
बहुत भाँति चित धरत निठुरता सब तजि और यहै जिय आवत।
कोटि स्वर्ग सम, सुख अनुमानत हरि समीप समता नहिं पावत।।
थकित सिन्धु नौका के खग ज्यौं फिरि-फिरि फेरि वहै गुन गावत।।
जे बासना न विदरत अन्तर तेइ-तेइ अधिक अनूअर दाहत।
सूरदास परिहरि न सकत तन बारक बहुरि मिल्यो है चाहत।।36।।

(37)

नाहिंन रह्यो मन में ठौर।
नंदनंदन अछत कैसे आनिए उर और ?
चलत, चितवत, दिवस जागत, सपन सोवत राति।
हृदय तो वह स्याम मूरति छन न इत उत जाति।।
कहत कथा अनेक ऊधो लोकलाभ दिखाय।
कहा करौं तन प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय।।
स्याम गात सरोज आनन ललित अति मृदु हास।
सूर ऐसे रूप कारन मरत लोचन प्यास।।37।।

(38)

कहति कहा ऊधो सों बौरी।
जाको सुनत रहे हरि के ढिग सखा यह सो री।।
हमको जोग सिखावन आयो यह तेरे मन आवत ?
कहा कहत री मैं पत्यात री नहीं सुनी कहनावत ?
करनी भली भलेई जानैं कपट कुटिल की खानि।
हरि को सखा नहीं री माई ! यह मन निसचय जानि।।
कहाँ रास-रस कहाँ जोग-जप ? इतनो अन्तर भाखत।
सूर सबै तुम कत भईं बौरी याकी पति तो राखत।।38।।

(39)

प्रकृति जोइ जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागै सूधि न काहु करी।
जैसे काग भच्छ नहिं छाड़ै जनमत जौन धरी।
धोए रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी।।
ज्यौं अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरिन धरी।
सूर होउ से होउ नहिं, तैसे हैं एउ री।।39।।

(40)

तौ हम मानैं बात तुम्हारी।
अपने ब्रह्म दिखावहु ऊधो मुकुट पिताम्बरधारी।।
भजिहैं तब ताको सब गोपी सहि रहि हैं बरू गारी।
भूत समान बतावत हमको जारहु स्याम बिसारी।।
जे मुख सदा सुधा अंचवत हैं ते बिष क्यों अधिकारी ?
सूरदास प्रभु एक अंग पर रीझि रहीं ब्रजनारी।।40।।

एम० ए० -I हिन्दी

बिहारी

संलग्नक 5 पेज

[1]

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होय ॥

[2]

कीनैं हूँ कोरिक जतन, अब कहि काढ़ै कौनु ।
भो मन मोहन-रूपु मिलि, पानी मैं कौ लौनु ॥

[3]

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि ॥

[4]

अजौं तर्‌यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक रंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतनु के संग ॥

[5]

बेधक अनियारे नयन, बेधत करि न निषेधु।
बरबट बेधतु मो हियौ तो नासा कौ बेधु ॥

[6]

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सब बात ॥

[7]

नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगै कौन हवाल ॥

[8]

खेलन सिखए, अलि, भलैं चतुर अहेरी मार।
कानन-चारी नैन-मृग नागर नरनु सिकार ॥

[9]

रस सिंगार-मंजनु किए, कंजनु भंजनु दैन।
अंजनु रंजनु हूँ बिना खंजनु गंजनु, नैन ॥

[10]

जुवति जोन्ह में मिलि गई, नैकु न होति लखाइ।
सौंधे की डोरे लगी, अली चली संग जाइ ॥

[11]

जोग-जुगति सिखए सबै, मनो महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता, काननु सेवत नैन ॥

[12]

बन्धु भए कब दीन को, को तार्‌यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठे विरुद कराइ ॥

[13]

जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहै, आँखैं लागति नाँहि ॥

[14]

थोरैं ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ, कान्ह, मनौ भए आजकाल्हि के दानि ॥

[15]

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग।
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफता-रंग ॥

[16]

पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर कै चहुँ पास।
नितप्रति पून्यौईं रहै आनन-ओप-उजास ॥

[17]

तंत्री-नाद कबित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग॥

[18]

लसतु सेतसारी-ढप्यौ, तरल तर्यौना कान।
पर्‌यो मनौ सुरसरि-सलिल, रबि-प्रतिबिंबु बिहान॥

[19]

करी बिरह ऐसी तऊ, गैल नै छाड़तु नीचु।
दीनैं हूँ चसमा चखनु, चाहै लहै न मीचु॥

[20]

गिरि तें ऊँचे रसिक-मन, बूड़े जहाँ हजारु।
वहै सदा पसु-नरनु कौं, प्रेम-पयोधि पगारु॥

[21]

कहत सबै, बेंदी दियैं, आँकु दस गुनौ होतु।
तिय-लिलार बेंदी दियैं अगिनितु बढ़तु उदोतु॥

[22]

कर के मीड़ें कुसुम लौं, गई बिरह कुम्हिलाइ।
सदा समीपनि सखिनु हूँ नीठि पिछानी जाइ॥

[23]

औंधाई सीसी, सुलखि बिरह-बरनि बिललात।
बिच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ हुई न गात॥

[24]

तन भूषन, अंजन दृगनु, पगन महावर-रंग।
नहिं सोभा कौं साजियतु, कहिबैं हीं कौं अंग॥

[25]

वे न इहाँ नागर, बढ़ी, जिन आदर तौ आब।
फूल्यो अनफूल्यौ भयौ गँवई गाँव गुलाब॥

[26]

कोरि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहिं बीचु।
नल-बल जल ऊँचो चढ़ै, अंत नीच कौ नीचु॥

[27]

चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट-पट झीन।
मानहुँ सुरसरिता-बिमल-जल उछरत जुग मीन॥

[28]

सघन कुंज, घन घन-तिमिरु, अधिक अँधेरी राति।
तऊ न दुरिहै, स्याम, वह, दीपशिखा सी जाति॥

[29]

स्वारथ सुकृत न, श्रम वृथा, देखि बिहंग बिचारि।
बाज, पराऐं पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि॥

[30]

सीस-मुकुट कटि-काछनी, कर-मुरली उर-माल।
इहिँ बानक मो मन सदा, बसौ बिहारी-लाल॥

[31]

चुवतु स्वेद मकरन्द-कन, तरु, तरु तर बिरमाइ।
आवतु दच्छिन देस तैं, थक्यौ बटोही बाइ॥

[32]

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न दीन दयाल।
दु:खी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल॥

[33]

दिसि दिसि कुसुमित देखियत, उपवन-विपिन समाज।
मनहुँ वियोगिनु कौं कियौ, सर-पंजर रितुराज॥

[34]

अरुन-सरोरुह कर-चरन, दृग-खंजन, मुख-चंद।
समै आइ सुन्दरि सरद, काहि न करति अनंद॥

[35]

छकि रसाल-सौरभ सने, मधुर माधुरी-गन्ध।
ठौर-ठौर झौरत झपत, झौंर-झौंर मधु-अन्ध॥

[36]

इन दुखिया अँखियानु कौं, सुखु सिरज्योई नाँहिं।
देखैं बनै न देखतै, अनदेखैं अकुलाँहि॥

[37]

कर लै, सूँधि सराहि हूँ रहे सबै गहि मौन।
गंधी अंध, गुलाब कौ गँवई गाहक कौन॥

[38]

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ॥

[39]

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥

[40]

रनित-भृंग-घंटावली, झरत दान मधु-नीरु।
मंद मंद आवत चल्यौ, कुंजरु कुंज-समीर॥